7 कलाकार का असंतोष

एक गाँव में एक आदमी रहता था। वह मिट्टी की मूर्तियाँ बनाया करता था। उसकी बनाई मूर्तियाँ सुंदर होती थीं, इसलिए वे बाजार में आसानी से बिक जाती थीं। अच्छे दिन थे। उसका गुजारा मज़े में हो जाता था।

जब उसका लड़का बड़ा होने लगा तो बाप ने बेटे के हाथ में हुनर देखकर उसे भी मूर्ति बनाने का काम सिखा दिया। अब बाप और बेटा दोनों मूर्तियाँ बनाने लगे। बेटे का हाथ बाप से ज्यादा साफ था। वैसे भी नवयुवक होने के कारण वह अधिक चुस्त और फुर्तीला था। उसकी मूर्तियाँ बाप से अच्छी बनने लगी। शुरू में तो उसकी बनाई मूर्तियाँ उसी दाम में बिकती थी, जिस दाम में बाप की लेकिन बाप की झिड़कियाँ खाने के बाद और अधिक ध्यान से काम करने के कारण, उसकी बनाई हुई मूर्तियाँ बाप की बनाई हुई मूर्तियों से अधिक दाम पर बिकने लगीं। बाप की मूर्ति बिकती सात रुपये में, बेटे की बिकती दस रुपये में।

लेकिन इस पर भी बाप की डाँट–डपट और झिड़कियाँ कम नहीं हुई। वह बेटे की बनाई हुई मूर्तियों में दोष निकालता रहता।

बेटे ने मूर्ति बनाने की ओर अधिक ध्यान दिया। वह बहुत मेहनत से मूर्तियाँ बनाने लगा।

अब बेटे की मूर्तियाँ अधिक तराशी हुई होने लगीं। बाजार में उनका दाम भी बढ़ गया। बाप की बनाई मूर्तियाँ सात रुपये में ही बिकती रहीं जबकि बेटे की बनाई मूर्तियों की कीमत बढ़कर बारह, पंद्रह और फिर बीस तक पहुँच गई।

मगर बाप को संतोष नहीं हुआ। वह बेटे की बनाई मूर्ति में दोष निकालता – ये आँख दूसरी आँख से अधिक बड़ी बन गई है।..... कंधों की गोलाई बराबर नहीं..... ये कान बनाए हैं या अनाज साफ करने के छाज ?.... ..... नाखून बहुत छोटे हैं दिखते तक नहीं..... और ये नाभि बनाई है या अपने गाँव का कुआँ ?'' एक दिन बेटे ने झल्लाकर कहा, ''बापू तुम मेरी मूर्तियों में दोष क्यों निकालते हो ? तुम्हारी खुद की मूर्तियाँ तो दोषों से भरी हुई होती हैं। मैं तुम्हारी हर मूर्ति में बीस दोष निकाल सकता हूँ। अब देख लो– तुम्हारी बनाई मूर्ति अभी तक सात रुपये में ही बिकती है और मेरी

मूर्ति के लिए लोग बीस रुपये तक खुशी से दे जाते हैं। मेरे खयाल से मेरी मूर्ति में कोई दोष नहीं होता। वे इतनी सजी–संवरी होती हैं कि अब उनमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है।''

बाप उदास हो गया। दुःखी स्वर में वह बोला, ''बेटे, मुझे यह बात मालूम है लेकिन तेरे मुँह से यह बात सुनकर मुझे लगने लगा है कि अब तुझे तेरी मूर्तियों के लिए बीस रुपये से अधिक कभी नहीं मिलेंगे।''

''क्यों ?'' बेटे के स्वर में आश्चर्य था।

बेटे की ओर देखता हुआ बाप बोला, ''क्योंकि जब मूर्तियों को बनाने वाले कलाकार को खुद ये लगने लगे कि उसके काम में निखार आ गया है और उसमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं रही है तो मान लेना कि उसका विकास रुक गया है। कलाकार का संतोष उसकी प्रगति को वहीं रोक देता है। एक दिन मुझे भी अपने काम से संतोष हो गया था और आज तक मुझे मूर्तियों की कीमत कभी सात रुपये से अधिक नहीं मिली है।''

बेटा लज्जित हो गया और उसका सिर नीचे झुक गया।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

गुजारा	–	जीवन यापन, जिंदगी का चलना
हुनर	–	योग्यता, कौशल, प्रतिभा
दाम	–	कीमत
झिड़की	–	हल्की डाँट
तराशी	–	निखरी, अच्छे ढंग से उकेरी गई
संतोष	–	तसल्ली, तृप्ति, संतुष्टि
छाज	–	सूप, छाजळा
झल्लाकर	–	खीझकर, चिढ़ना
लज्जित	–	शर्माना

उच्चारण के लिए

मूर्तियाँ, हुनर, शुरू, झल्लाकर, पंद्रह, संतोष

सोचें और बताएँ

1. बेटे की मूर्तियाँ आसानी से क्यों बिक जाती थी ?
2. बाप उदास क्यों हो गया ?
3. कलाकार के संतोषी होने पर उसकी कला पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(दोष, गुजारा, लज्जित, मेहनत, आश्चर्य)

(क) उसका .....मजे में हो जाता था

(ख) वह बेटे की बनाई हुई मूर्तियों में .....निकालता रहता था।

(ग) वह बहुत ..... से मूर्तियाँ बनाने लगा।

(घ) बेटा .....हो गया और उसका सिर नीचे झुक गया ।

(ङ) बेटे के स्वर में..... था ।

2. कलाकार के दिन कैसे बीत रहे थे और क्यों ?
3. कलाकार अपने बेटे की बनी मूर्तियों में दोष क्यों निकालता रहता था ?
4. बेटे की मूर्तियाँ बाप की मूर्तियों से अच्छी क्यों बनने लगी ?
5. बेटे की बात सुनकर पिता को कैसा लगा ? पिता ने उसे क्या समझाया?

भाषा की बात

- एक वचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए।

मूर्ति	–	मूर्तियाँ
खिड़की	–	.....
झिड़की	–	.....
कली	–	.....
गली	–	.....
डाली	–	.....

यह भी करें–

- विभिन्न मूर्तियों के बारें में जानकारी प्राप्त कर चर्चा करें।
- आप भी मिट्टी या कागज की लुगदी से विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ बनाकर अपनी कक्षा में प्रदर्शित करें।
- ''बाद में बेटा लज्जित हुआ और उसका सिर क्यों झुक गया।'' बताइए ऐसा क्यों हुआ इस पर कक्षा में चर्चा करें।

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, अपितु परिस्थितियाँ मनुष्य की दासी है।
–डिजराइली